पद ९१

(राग: भैरवी - ताल: त्रिताल पंजाबी)

सख्या हा वैभव दो दिवसांचा। कनक कांति मदनांचा।।धु.।। क्षणाक्षणा आयुष्य जात हें वाया। समय कठिन मरणाचा।।१।। नाशवंत जग क्षणिक दृश्य हें। मिनं आठव धरी याचा।।२।। ज्ञानरूप मार्तांड कृपेनें। चिन्माणिक भेटेल साचा।।३।।